International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

मुझे पहचानो : तात्विक समीक्षा

Laxmi Jaiswal

Researcher, SNDT University

Abstract

संजीव का उपन्यास 'मुझे पहचानो' भारत में प्रचलित सती प्रथा पर आधारित है. सती प्रथा को समाप्त करने वाले राजा राममोहन राय की भाभी पर सती प्रथा को लेकर हुए उत्पीड़न को लेकर केंद्र में रखकर यह उपन्यास लिखा गया है.

प्राक्कथन

मुझे पहचानो सती प्रथा पर आधारित है तथा यह सती प्रथा पर प्रथम एक ऐसा उपन्यास है जिसमें सती प्रथा पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित किया गया है | यह ऐतिहासिक तथ्य है हमारे भारतीय संस्कृति के नाम पर सदियों से चली आ रही को कुप्रथा है | उपन्यास में ऐतिहासिक तथ्य एवं कुप्रथा,अंधविश्वास मौजूद होने के कारण मैं इस उपन्यास की ओर आकृष्ट हुई तथा इस पर गहन अध्ययन कर इस पुस्तक की समीक्षा की है यह फलस्वरूप इस समीक्षा में उपलब्ध है |

उद्देश्य -

- अंधविश्वास के प्रति समाज को जागरूक करना |
- ऐतिहासिक तथ्यों से अवगत कराना |
- आर्थिक शोषण पर ध्यान लक्षित करना |
- वेश्यावृति जो समाज में बढ़ रहे हैं उसके प्रति स्त्री को सशक्त करना |
- स्त्री शोषण की विरुद्ध स्त्रियों को सशक्त करना |
- किसानों की स्थिति पर ध्यान केंद्रित करना |

सामाजिक प्रासंगिकता -

वर्तमान युग में किसानों की स्थिति दयनीय है तथा आज भी स्त्री का शोषण -ग्रामीण हो या शहरी इलाका सभी स्थानों पर इसका मामला बढ़ रहा है | स्त्रियां वैश्यावृति करते हैं या उन्हें इसके लिए मजबूर किया जाता है | आज भी अंधविश्वास किसी न किसी रूप में विद्यमान है |

रूपरेखा निम्नलिखित है -

प्रथम अध्याय - कथानक में संपूर्ण कथा का वर्णन किया गया है इसमें वर्तमान कथा है और दूसरी तरफ ऐतिहासिक तथ्यों का वर्णन है |

द्वितीय अध्याय - इस अध्याय का शीर्षक कथ्य विश्लेषण है | इस अध्याय में पानी की समस्या, अंधविश्वास, भ्रूण हत्या, निम्न वर्गों का वोट, जायदाद को लेकर झगड़ा, स्त्री का शोषण,वेश्यावृत्ति, पाखंड,सती प्रथा, ऐतिहासिक तथ्य सती प्रथा पर विरोध,आर्थिक शोषण, कर्मचारियों के साथ अत्याचार, किसानो की स्थिति का वर्णन इस अध्याय में किया गया है |

तृतीय अध्याय- इस अध्याय में पात्रों का चरित्र चित्रण किया गया है - लालसाहब, रायसाहब, सती, दुबे, मनोज, कुलदेवी इत्यादि पात्रों का मुख्य रूप से उनके गुण और दुर्गुण का वर्णन किया गया है |

प्रथम अध्याय

भूमिका

मुझे पहचानो उपन्यास प्रसिद्ध कहानीकार संजीव ने लिखा है | यह उपन्यास समाज के धार्मिक संसारिक और बौद्धिक पाखंड के परतें उधेड़ता हैं | इस उपन्यास को

साल 2023 के हिंदी भाषा वर्ग में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है |

इस उपन्यास में सती प्रथा,धर्म और धन के घालमेल और समाज में फैल रहे अंधविश्वास तथा पुरुष प्रधान समाज में ताकत का नशा कैसे महिलाओं के खिलाफ खड़ा कर देता है इसका चित्रण इस उपन्यास में किया गया हैं |

यह उपन्यास 2020 में प्रकाशित हुआ है यह नया है इस पर अब तक किसी लेखक ने समीक्षा नहीं किया | यह प्रथम समीक्षा लेखन है जो इस उपन्यास में समाहित लेखक द्वारा लिखे गए विषयों में गुण, दोष दोनों को उजागर करता है | यह मुझे उपन्यास पहचानो उपन्यास को खंगाल कर परोसा गया विषय वस्तु है जो निम्नलिखित रूपरेखा में खंड-खंड कर विभिन्न विषयों पर प्रकाश डालने का कार्य हैं |

कथानक :

वर्तमान कथा -

अजयगढ़ विजयगढ़ के बीच कंठा नामक रियासत है | असल में यह दोनों गढ़ो के बीच की दूरी 500 किलोमीटर से ज्यादा है | जबकि यह उपन्यास में कंठा को छोटी सी रियासत बताया गया है | लाल साहब और राय साहब दोनों उदय प्रताप सिंह के बेटे हैं | लेकिन लाल साहब रखैल से जन्मे पुत्र है | राय साहब रानी से जन्मे पुत्र है | राय साहब का असली नाम सुरेंद्र प्रताप सिंह है| लाल साहब का असली नाम वीरेंद्र प्रताप सिंह है| दूबे लालसाहब और रायसाहब के रियासतो का देख रेख करता हैं | मनोज पांच साल से नौकरी के लिए भटक रहा है और नौकरी के चक्कर में रत्न पट्टी में स्थित विजयगढ़ नामक गांव जाता है | रतनापट्टी में वह नौकरी के सिलसिले में दूबे से मिलता है| दुबे मनोज को बताता है कि जैसे कोबरा अपने बच्चों को जन्म देता है और उसे खा जाता है | वैसे ही रायसाहब और लाल साहब है | राय साहब और लाल साहब के सामने जाना तो गर्दन नीचे रखना| दुबे मनोज को नौकरी के लिए लाल साहब के महल में ले जाता है | लालसाहब से मिलकर मनोज अपना परिचय देता है लालसाहब को कि वह एम. ए. किया हैं तथा एल. एल बी भी किया हैं तभी लाल साहब मनोज से कहता है कि हमें मास्टर नहीं मैनेजर चाहिए जो हमारे रियासत की देखरेख कर सके| मनोज से लाल साहब अंगड़ाई लेते हुए कहता है कि काम 24 घंटे हैं पगार 1000 है | चाहो तो लाखों उगा लो, यहां फ्री सर्विस देने वालों की लाइन लगी हुई है| मनोज मजबूरन नौकरी करने के लिए तैयार हो जाता है | दुबे मनोज को रियासत के बारे में बताता है कि कंठा नदी से दूर एक महल है जहां रानीयां स्नान करती है | पर्दा लगा हुआ है ताकि कोई ताक झांक न कर सके | दुबे मनोज को बताता है कि एक महल है जो लाल साहब ने कुलदेवी के लिए बनवाए हैं लोग कहते हैं यहां एक कंठा नदी है जहां कुछ ना कुछ अजीबोगरीब होता रहता है | कंठा नदी में हथनी मरी थी जिसकी आत्मा घूमती है उसे नदी के पास तथा कुलदेवी जो कुंवारी मां थी वह बावड़ी में कूद कर आत्महत्या कर लेती है उसकी आत्मा भी भटकती है जब तक कुलदेवी जिंदा थी तब तक गांव में पानी की समस्या नहीं हुई उसके मरते ही नदी और बावड़ी में सूखा पड़ गया | इसलिए गांव वालों नदी के पास जाकर पूजा करते हैं जिससे कुलदेवी का प्रकोप गांव वालों पर ना पड़े | लाल साहब और राय साहब के बीच असली और नकली वारिश होने का केस जायदाद को लेकर कोर्ट में चल रहा है | मनोज दुबे को बाहर मछली खाने के लिए आमंत्रण देता है दुबे मना कर देता है क्योंकि वह ब्राह्मण है | इसलिए मनोज को अकेले दूसरे दिन निकलना पड़ता है मनोज अनमोल के घर मछली खाने जाता है | जहां उसे अनमोल की पत्नी सती मिलती है मनोज सती से कहता है कि यहां नदी के पास से जो भी गुजरता है वह एक रुपए सिक्के चढ़ा जाता है | औरतें नदी के पास अभूआती आती है पूजा करती है | तब सती कहती है कि तुम सती को देखना चाहते हो ? और वह खुद सती है और वह 5 साल तक खुद की पूजा करती रही ऐसा वह मनोज को बताती है |

यह सुनकर मनोज आश्चर्यचकित रह जाता है | वह मनोज को फ्लैसबैक में ले जाती है..... 5 साल पहले बड़े राजा साहब उदय प्रताप सिंह की रियासत या विजयगढ़ उनकी दो बेटियां, तीन बेटे, दो राय साहब एक लाल साहब एक से एक झूठी शान में बढ़कर, तालुकदार की बेटी सावित्री कुंवर से ब्याह होता है | छोटे रायसाहब का 2 वर्ष बाद सावित्री कुमार के पेट में एक बीज अकुआता है अर्थात वह गर्भ से होती है | उसके पति की मृत शरीर आया | उसके पहले दिन सिंदूर, चूड़ी और तमाम श्रृंगार को हटाकर विधवा बनाया गया था | किसी अनहोनी की आशंका में उठकर वह भागी थी कि सब ने उसे पकड़ लिया वह चीखी मेरे पेट में कुंवार का बीज है भीड़ के धक्के से आगे ठेल दी जाती है चिता तक यह क्रिया जारी रही | चिता पर पति की लाश को गोद में लेकर बिठा दिए जाने पर भी उसे नीम बेहोशी में वह पूरी शक्ति लगाकर चीख पड़ती है | गांव वाले बहुत सारा पेट्रोल घी डालते हैं जिससे आग बुझ न पाए,तेज आंधी के कारण बगल का पीपल अर्रा कर गिरा | जलती चिता पर और सावित्री उछाल दी गई | वह होश में आयी तो वह मड़ई में थी | अनमोल की मां उसे गर्म दूध पिला रही थी | " उछाल खानी के कारण उसका शरीर नदी में गिरी " बहते बहते मल्लाह के लकड़ी छानने के जाल में आ गई |

ऐतिहासिक कथा :

सन १८२९ में वायसराय विलियम बैंटिक ने राजा राममोहन राय के कहने पर सती प्रथा को रोकने का कानून बनाया था | राजा राममोहन राय को पीड़ा इसलिए हुई

क्योंकि उनकी भाभी को सती किया गया था और वह अपनी भाभी को बहुत मानते थे | " बारिश हो रही थी रात को लोग जला कर लौट आए थे | लेकिन सुबह लोगों ने पाया कि वही झाड़ियों में अधजली अवस्था में कोई नंगी औरत छुपने की कोशिश कर रही है वहीं थी, तब गांव वालों ने उन्हें दोबारा जलाया|"

धर्माचार्य ने काफी तथ्य जुटा लिए हैं ऐसा वक्ता अवधू धर्माचार्य से कहता है | राम मोहन तीन भाई थे बड़े भाई जगनमोहन उनसे छोटे राम मोहन और दूसरी मां से जन्मे राम लोचन |

जगनमोहन की चार पत्नियों थी जिनमें दूसरी या तीसरी थी आलोक या आलोक का मंजरी या अलोकामणि उम्र 40 के आसपास.....सन १८१० की 8 अप्रैल को जगनमोहन की मृत्यु हुई | राममोहन राय की भाभी अलोक मंजरी जी का सहमरण यानी सतीदाह हुआ | पिता थे नहीं राममोहन रंगपुर गए हुए थे उनके आने तक प्रतीक्षा नहीं की गई, इसलिए की राममोहन सती प्रथा के घोर विरोधी थे वे होते तो होने नहीं देते |

धर्माचार्य कहता है अंग्रेजों ने हमारी भारतीय संस्कृति का हिस्सा सती प्रथा पर रोक लगाया और हमारी भारतीय संस्कृति को मिटा कर रख दिया हैं |

भगवान शिव की पत्नी सती ने भी अपने पति के अपमान होने पर अपने पिता दक्ष के यहां हो रहे यज्ञ में अपना आहुति दे दी वह भी सती हो गई | रानी पद्मावती ने भी अपने पति की मृत्यु की खबर सुनते ही अपने आप को आग में जलाा दिया जोहर हो गई और उनके साथ में जो विधवा और छोटी बच्चियों थी वह भी जौहर हुई पति जीवित हो या मर गया हो अगर वह युद्ध में जाता है तो पत्नी जो जोहर लेती है | सती प्रथा को लेकर रायसाहब ने दिल्ली में सती मंदिर का स्थापना किया है इस अवसर पर उन्होंने भाषण रखा था उसे भाषण में सती और अपने दोनों बेटों लव और कुश को लेकर दुनिया के सामने आती है और जो घटना उसके साथ घटी वह बताती है तब राय साहब अपने लठेतो को मार कर भगाने के लिए कहता है तभी धर्माचार्य इस पर रोक लगाते हैं इस तरह कथा का समापन होता है |

द्वितीय अध्याय

द्वितीय अध्याय - कथ्य विश्लेषण

२ प्रस्तावना

२. १ पानी की समस्या

२. २ अंधविश्वास

२. ३ भ्रूण हत्या

२. ४ निम्न वर्गों का वोट

२. ५ जायदाद को लेकर झगड़ा

२. ६ सती प्रथा

२. ७ स्त्री का शोषण

२. ८ वेश्यावृति का शिकार

२. ९ ऐतिहासिक तथ्य

२. १० आर्थिक शोषण

२. ११ कर्मचारियों के साथ अत्याचार

२. १२ किसानों की स्थिति

२ प्रस्तावना :

मुझे पहचानो उपन्यास में समाहित कथ्यों का विश्लेषण निम्नलिखित रूप से किया गया हैं : इस अध्याय में पानी की समस्या, अंधविश्वास, भ्रूण हत्या, निम्न वर्गो का वोट, जायदाद को लेकर झगड़ा, स्त्री का शोषण,वेश्यावृत्ति, पाखंड,सती प्रथा, ऐतिहासिक तथ्य सती प्रथा पर विरोध,आर्थिक शोषण, कर्मचारियों के साथ अत्याचार, किसानो की स्थिति का वर्णन इस अध्याय में किया गया है |

२. १ पानी की समस्या :

" पठारी जमीन है बहुत कम फसल होती है | नीचे की जमीन में धान, ऊपर अरहर, सरसों और गुंज |

" पानी कहाँ है? कुंवारी तो सुखती जा रही है |"

२. २ अंधविश्वास :

लोग कहते हैं यहां एक कंठा नदी है जहां कुछ ना कुछ अजीबोगरीब होता रहता है | कंठा नदी में हथनी मरी थी जिसकी आत्मा घूमती है उसे नदी के पास तथा

कुलदेवी जो कुंवारी मां थी वह बावड़ी में कूद कर आत्महत्या कर लेती है उसकी आत्मा भी भटकती है जब तक कुलदेवी जिंदा थी तब तक गांव में पानी की समस्या नहीं हुई उसके मरते ही नदी और बावड़ी में सूखा पड़ गया | इसलिए गांव वालों नदी के पास जाकर पूजा करते हैं जिससे कुलदेवी का प्रकोप गांव वालों पर ना पड़े |

२. ३ भ्रूण हत्या :

राजकुमारो का जिसपर दिल आता उसे उठा लेते और उनका शारीरिक शोषण करते और उन दासियो से जो संतान जन्मति वो यदि लड़की होती तो उसे गर्भ में मार दिया जाता और लड़का होता तो वह जीवित रखा जाता |

२. ४ निम्न वर्गों का वोट :

विजयगढ़ और अजयगढ़ में चुनाव शुरू हुआ परन्तु जो निम्न वर्ग के है उन्हें वोट देने का अधिकार नहीं है और शिक्षा से वंचित रखा जाता और बेगारी करवाया जाता है |

२. ५ जायदाद को लेकर झगड़ा :

लाल साहब और राय साहब दोनों उदय प्रताप सिंह के बेटे हैं | लेकिन लाल साहब रखैल से जन्मे पुत्र है | राय साहब रानी से जन्मे पुत्र है | राय साहब का असली नाम सुरेंद्र प्रताप सिंह है| लाल साहब का असली नाम वीरेंद्र प्रताप सिंह है|

लाल साहब और राय साहब के बीच असली और नकली वारिश होने का केस जायदाद को लेकर कोर्ट में चल रहा है |

२. ६ सती प्रथा :

स्त्री स्वयं दूसरी स्त्री का दुश्मन है उपन्यास में एक स्त्री कहती है हाय राम हमें कब मौका मिलेगा सती होने का?

मनोज अनमोल के घर मछली खाने जाता है | जहां उसे अनमोल की पत्नी सती मिलती है मनोज सती से कहता है कि यहां नदी के पास से जो भी गुजरता है वह एक रुपए सिक्के चढ़ा जाता है | औरतें नदी के पास अभूआती आती है पूजा करती है | तब सती कहती है कि तुम सती को देखना चाहते हो ? और वह खुद सती है और वह 5 साल तक खुद की पूजा करती रही ऐसा वह मनोज को बताती है |

यह सुनकर मनोज आश्चर्यचकित रह जाता है | वह मनोज को फ्लैसबैक में ले जाती है..... 5 साल पहले बड़े राजा साहब उदय प्रताप सिंह की रियासत या विजयगढ़ उनकी दो बेटियां, तीन बेटे, दो राय साहब एक लाल साहब एक से एक झूठी शान में बढ़कर, तालुकदार की बेटी सावित्री कुंवर से ब्याह होता है | छोटे रायसाहब का 2 वर्ष बाद सावित्री कुमार के पेट में एक बीज अकुआता है अर्थात वह गर्भ से होती है | उसके पति की मृत शरीर आया | उसके पहले दिन सिंदूर, चूड़ी और तमाम श्रृंगार को हटाकर विधवा बनाया गया था | किसी अनहोनी की आशंका में उठकर वह भागी थी कि सब ने उसे पकड़ लिया वह चीखी मेरे पेट में कुंवार का बीज है भीड़ के धक्के से आगे ठेल दी जाती है चिता तक यह क्रिया जारी रही | चिता पर पति की लाश को गोद में लेकर बिठा दिए जाने पर भी उसे नीम बेहोशी में वह पूरी शक्ति लगाकर चीख पड़ती है | गांव वाले बहुत सारा पेट्रोल घी डालते हैं जिससे आग बुझ न पाए,तेज आंधी के कारण बगल का पीपल अर्रा कर गिरा | जलती चिता पर और सावित्री उछाल दी गई | वह होश में आयी तो वह मड़ई में थी | अनमोल की मां उसे गर्म दूध पिला रही थी | " उछाल खाने के कारण उसका शरीर नदी में गिरी " बहते बहते मल्लाह के लकड़ी छानने के जाल में आ गई |

२. ७ स्त्री का शोषण :

सावित्री कुंवर का विवाह जबरन छोटे राजकुमार से किया गया | जो सावित्री कुंवर स्कुल में झांसी की रानी लक्ष्मी बना करती थी वहीं सावित्री कुंवर का पति दिन रात शारीरिक शोषण करता था | उसका शरीर खरोचता, नोचता, दांत से काटता, महावारी में भी शारीरिक सबंध बनाता | कुलदेवी का भी शारीरिक शोषण उदय प्रताप करता है वह कुंवारी माँ बनती है कुंवारी माँ बनने का दाग लगने के कारण कुलदेवी बावड़ी में कूदकर आत्महत्या कर लेती है |

२. ८ वेश्यावृति का शिकार :

राजाओं की रानीयां अर्थात उनकी पत्नियों होती थी लेकिन वे दासियो के साथ भी नजायज संबंध रखते थे| कुछ स्त्रीयां स्वयं से वेश्यावृत्ति करती थी, कुछ स्त्री को जबरन राजा अपने आदमियों से कह कर उठा लाते थे | उन्हीं में से एक थी कुलदेवी जो लाल साहब की मां थी |

कुलदेवी यानी कुंवारी भी दूसरी बच्चों की तरह अपनी मां की कोख से पैदा हुई होगी थोड़ी बहुत बड़ी हुई होगी तो सड़क के स्कूल में तीसरा चौथी कक्षा तक पढ़ाई की होगी इसके बाद दूसरे बच्चे की तरह पढ़ाई छोड़कर गाय भैंस चराने चल दी होगी कंठा की दूसरी लड़कियों की तरह 12 13 वर्ष के होते ही लाली काली लगाकर खड़ी हो गई होगी | वही देखा होगा रियासत के राजकुमारों ने और उसे परी उठवा लिया होगा |

२. ९ ऐतिहासिक तथ्य :

सन १८२९ में वायसराय विलियम बैंटिक ने राजा राममोहन राय के कहने पर सती प्रथा को रोकने का कानून बनाया था | राजा राममोहन राय को पीड़ा इसलिए हुई

क्योंकि उनकी भाभी को सती किया गया था और वह अपनी भाभी को बहुत मानते थे | " बारिश हो रही थी रात को लोग जला कर लौट आए थे | लेकिन सुबह लोगों ने पाया कि वही झाड़ियों में अधजली अवस्था में कोई नंगी औरत छुपने की कोशिश कर रही है वहीं थी, तब गांव वालों ने उन्हें दोबारा जलाया|"

धर्माचार्य ने काफी तथ्य जुटा लिए हैं ऐसा वक्ता अवधू धर्माचार्य से कहता है | राम मोहन तीन भाई थे बड़े भाई जगनमोहन उनसे छोटे राम मोहन और दूसरी मां से जन्मे राम लोचन |

जगनमोहन की चार पत्नियों थी जिनमें दूसरी या तीसरी थी आलोक या आलोक का मंजरी या अलोकामणि उम्र 40 के आसपास.....सन १८१० की 8 अप्रैल को जगनमोहन की मृत्यु हुई | राममोहन राय की भाभी अलोक मंजरी जी का सहमरण यानी सतीदाह हुआ | पिता थे नहीं राममोहन रंगपुर गए हुए थे उनके आने तक प्रतीक्षा नहीं की गई, इसलिए की राममोहन सती प्रथा के घोर विरोधी थे वे होते तो होने नहीं देते |

धर्माचार्य कहता है अंग्रेजों ने हमारी भारतीय संस्कृति का हिस्सा सती प्रथा पर रोक लगाया और हमारी भारतीय संस्कृति को मिटा कर रख दिया हैं |

२. १० आर्थिक शोषण :

मनोज पांच साल से नौकरी के लिए भटक रहा है और नौकरी के चक्कर में रत्न पट्टी में स्थित विजयगढ़ नामक गांव जाता है | रतनापट्टी में वह नौकरी के सिलसिले में दूबे से मिलता है|

दुबे मनोज को नौकरी के लिए लाल साहब के महल में ले जाता है | लालसाहब से मिलकर मनोज अपना परिचय देता है लालसाहब को कि वह एम. ए. किया हैं तथा एल. एल बी भी किया हैं तभी लाल साहब मनोज से कहता है कि हमें मास्टर नहीं मैनेजर चाहिए जो हमारे रियासत की देखरेख कर सके| मनोज से लाल साहब अंगड़ाई लेते हुए कहता है कि काम 24 घंटे हैं पगार 1000 है | चाहो तो लाखों उगा लो, यहां फ्री सर्विस देने वालों की लाइन लगी हुई है| मनोज मजबूरन नौकरी करने के लिए तैयार हो जाता है |

२. ११ कर्मचारियों के साथ अत्याचार :

दुबे और मनोज सर झुका लेते हैं जब रायसाहब आते है | दुबे और मनोज पर रायसाहब की कांटेदार छड़ी पड़ी जिससे उनकी चमड़ी उधड़ गई क्योंकि 10 साल में जिस जमीन को लीज पर दी गई या उसका उत्खनन किया गया उनके नाम पते,बैंक इन्वेस्टमेंट,के डिटेल्स हाजिर करें ताकि पता चले कि रत्नो की चोरी कैसे हुई किस ने कितना लूटा? कैसे वरना इन दोनों का खेर नहीं ऐसा धमकी रायसाहब मनोज और दूबे को देते है |

२. १२ किसानों की स्थिति :

राज साहब की गुंडागर्दी चलती है विजयगढ़ में कोई उनके खिलाफ बोलने की हिम्मत नहीं जुटा पाता |

" कुओं और नदी का पानी सूख गया आपने नदी के किनारे कुएं खोद रखे हैं पम्प से पानी सोख लेते हैं " किसी किसान ने रायसाहब से कहा तभी राय साहब के आदमियों ने एक तमाचा जड़ दिया उसे | किसान खेती करने के लिए कर्ज लेता है पानी न मिलने के कारण खेती नहीं कर पाता कर्ज नहीं चूका पाता और आत्महत्या कर लेता है |

तृतीय अध्याय

तृतीय अध्याय

पात्रों का चरित्रचित्रण

पुरुष पात्र :

१. रायसाहब - रानी से जन्मे है |

२. लालसाहब - रखैल से जन्मे है |

३. दूबे - मैनेजर

४. मनोज सिंह - मैनेजर

५. राजेंद्र - लालसाहब का बेटा

६. विजेंद्र - लालसाहब का बेटा

७. उस्मान - मैनेजर

८. कुस्वाह मास्टर साहब

९. अछैबर सिंह- बेनामी जमीन के नामधारी

१०. अनमोल - सावित्री कुंवर का दूसरा पति

११. खलील मियां

१२धर्माचार्य - कुलगुरु

१३. अवधू - वक्ता

१४. अनुपम खरे - लालसाहब और रायसाहब का होम ट्यूटर

१५. महमूद साहब - विचारक, पुलिस अफसर

१५. लव - सावित्री का बेटा

१६- कुश - सावित्री का बेटा

स्त्री पात्र :

१. सावित्री कुंवर - तालुकेदार की बेटी, छोटे राजकुमार की पत्नी

२. कुलदेवी - उदय प्रताप सिंह की रखैल

३. कौशिल्या - लालसाहब की पत्नी

४. दुर्गावती - लालसाहब की बेटी

५ रानी साहिबा - रायसाहब की पत्नी

अन्य पात्र -

जयंत - हाथी

जयंती - हथिनी

पात्रों का चरित्रचित्रण

१. लालसाहब :

सम्पति :

लालसाहब राजा उदय प्रताप सिंह के पुत्र हैं लेकिन वह रखैल से जन्मे पुत्र है | लाल साहब के पास कुछ मुर्रा भैंसे थी, कुछ लाल सिंधी गायें, दो कलारास घोड़े थे, अब शायद एक ही है,एक जोड़ा हाथी,एक मर गया,एक है |"

स्वरूप :

लालसाहब का चेहरा दो राइफल धारी के बीच खरोंच खाया जैसा है | ब्राउन सफारी सूट पहना है, भरे -भरे क्लीन शेव्ड गाल, दाहिने हाथ में रक्षा के लाल धागे,औसत कद काठी, 45 के आसपास की उम्र | पूरे व्यक्तित्व में आकर्षण का केंद्र थी उनकी रोबदार नीली आंखें | इनका दूसरा नाम वीरेंद्र प्रताप सिंह है |

कंजूस आदमी :

लालसाहेब मनोज सिंह से कहते हैं कि हमें मास्टर नहीं मैनेजर चाहिए | " हमारा काम रियासत की निगरानी और उसे डेवलप करना | काम 24 घंटे पगार 1000 "|

घमंडी :

एक गर्विली मुस्कान में पूरे वजूद से अंगड़ाई लेकर मनोज सिंह से कहते हैं " चाहे तो हजार उगाह लो | चाहे लाख | यहां तो लाइन लगी हुई है फ्री सर्विस देने वालों की,मगर हमें योग्य आदमी चाहिए |

२ रायसाहब :

रायसाहब राजा उदय प्रताप सिंह के बेटे हैं उनका असली नाम सुरेंद्र प्रताप सिंह है |

गुंडागर्दी :

राज साहब की गुंडागर्दी चलती है विजयगढ़ में कोई उनके खिलाफ बोलने की हिम्मत नहीं जुटा पाता |

" कुओं और नदी का पानी सूख गया आपने नदी के किनारे कुएं खोद रखे हैं पम्प से पानी सोख लेते हैं " किसी किसान ने रायसाहब से कहा तभी राय साहब के आदमियों ने एक तमाचा जड़ दिया उसे |

कर्मचारियों पर अत्याचार :

दुबे और मनोज सर झुका लेते हैं जब रायसाहब आते है | दुबे और मनोज पर रायसाहब की कांटेदार छड़ी पड़ी जिससे उनकी चमड़ी उधड़ गई क्योंकि 10 साल में जिस जमीन को लीज पर दी गई या उसका उत्खनन किया गया उनके नाम पते,बैंक इन्वेस्टमेंट,के डिटेल्स हाजिर करें ताकि पता चले कि रत्नो की चोरी कैसे हुई किस ने कितना लूटा? कैसे वरना इन दोनों का खेर नहीं ऐसा धमकी रायसाहब मनोज और दूबे को देते है |

३. दुबे :

दुबे राय साहब और लाल साहब का मैनेजर है जाति से ब्राह्मण है |

रियासत के जानकर :

दुबे मनोज को रियासत के बारे में बताता है कि कंठा नदी से दूर एक महल है जहां रानीयां स्नान करती है | पर्दा लगा हुआ है ताकि कोई ताक झांक न कर सके | दुबे मनोज को बताता है कि एक महल है जो लाल साहब ने कुलदेवी के लिए बनवाए हैं | लाल साहब और राय साहब दोनों उदय प्रताप सिंह के बेटे हैं | लेकिन लाल साहब रखैल से जन्मे पुत्र है | राय साहब रानी से जन्मे पुत्र है | राय साहब का असली नाम सुरेंद्र प्रताप सिंह है| लाल साहब का असली नाम वीरेंद्र प्रताप सिंह है|

लाल साहब और राय साहब के बीच असली और नकली वारिश होने का केस जायदाद को लेकर कोर्ट में चल रहा है |

शाकाहारी :

जब मनोज सोन मछरी खाने की बात करता है तब "दुबे लगा घूरने मनोज को अपनी बड़ी बड़ी आंखों से,पिंनक गया," बाभन हुँ मालूम,अपना एक प्रोटोकॉल है | यहां मछरा मछरी नहीं चलती "|

लालची :

रानी साहिबा जयंती की आत्मा की शांति के लिए अनुष्ठान की बात करती है तब दुबे मनोज को कहता है " अरे अरे दुबे की मुद्रा बदलने लगी " यार तू तो मेरा भी गुरु निकाला लेकिन देख ज्यादा से ज्यादा ऐठ लेना | अब मजा आएगा, इस परम प्रतापी राजवंश की आत्मा जयंती गली-गली भीख मांगेगी |

४. मनोज :

मनोज 5 साल से नौकरी के लिए भटक रहा था नौकरी के सिलसिले में रत्नापट्टी राज्य में जाता है दुबे से मिलता है |

शिक्षा :

लालसाहब से मिलकर मनोज अपना परिचय देता है लालसाहब को कि वह एम. ए. किया हैं तथा एल. एल बी भी किया हैं |

आर्थिक शोषण :

मनोज पांच साल से नौकरी के लिए भटक रहा है और नौकरी के चक्कर में रत्न पट्टी में स्थित विजयगढ़ नामक गांव जाता है | रतनापट्टी में वह नौकरी के सिलसिले में दूबे से मिलता है|

दुबे मनोज को नौकरी के लिए लाल साहब के महल में ले जाता है | लालसाहब से मिलकर मनोज अपना परिचय देता है लालसाहब को कि वह एम. ए. किया हैं तथा एल. एल बी भी किया हैं तभी लाल साहब मनोज से कहता है कि हमें मास्टर नहीं मैनेजर चाहिए जो हमारे रियासत की देखरेख कर सके| मनोज से लाल साहब अंगड़ाई लेते हुए कहता है कि काम 24 घंटे हैं पगार 1000 है | चाहो तो लाखों उगा लो, यहां फ्री सर्विस देने वालों की लाइन लगी हुई है| मनोज मजबूरन नौकरी करने के लिए तैयार हो जाता है |

कामचोर :

लाल साहब जब मुंबई से लौटे तब मनोज उनके पास भागा भागा आया और सिर झुकाकर अभिवादन किया | लाल साहब ने पूछा क्यों बाबू मनोज सिंह पैसों के इंतजाम हो गया? मनोज ने कहा भाग दौड़ कर रहा हुँ |

यह ट्रकों का कबाड़,यह हाथी वाथी, घोड़े वोड़े,बंजर जमीन, मुकदमे.... जी करता है कोई भाग जाऊ, छोड़ छाड़ कर यह जी का जंजाल है "|

विश्वास लायक :

मनोज अनमोल के घर मछली खाने जाता है | जहां उसे अनमोल की पत्नी सती मिलती है मनोज सती से कहता है कि यहां नदी के पास से जो भी गुजरता है वह एक रुपए सिक्के चढ़ा जाता है | औरतें नदी के पास अभूआती आती है पूजा करती है | तब सती कहती है कि तुम सती को देखना चाहते हो ? और वह खुद सती है और वह 5 साल तक खुद की पूजा करती रही ऐसा वह मनोज को बताती है |

यह सुनकर मनोज आश्चर्यचकित रह जाता है | वह मनोज को फ्लैसबैक में ले जाती है..... 5 साल पहले बड़े राजा साहब उदय प्रताप सिंह की रियासत या विजयगढ़ उनकी दो बेटियां, तीन बेटे, दो राय साहब एक लाल साहब एक से एक झूठी शान में बढ़कर, तालुकदार की बेटी सावित्री कुंवर से ब्याह होता है | छोटे रायसाहब का 2 वर्ष बाद सावित्री कुमार के पेट में एक बीज अकुआता है अर्थात वह गर्भ से होती है | उसके पति की मृत शरीर आया | उसके पहले दिन सिंदूर, चूड़ी और तमाम श्रृंगार को हटाकर विधवा बनाया गया था | किसी अनहोनी की आशंका में उठकर वह भागी थी कि सब ने उसे पकड़ लिया वह चीखी मेरे पेट में कुंवार का बीज है भीड़ के धक्के से आगे ठेल दी जाती है चिता तक यह क्रिया जारी रही | चिता पर पति की लाश को गोद में लेकर बिठा दिए जाने पर भी उसे नीम बेहोशी में वह पूरी शक्ति लगाकर चीख पड़ती है | गांव वाले बहुत सारा पेट्रोल घी डालते हैं जिससे आग बुझ न पाए,तेज आंधी के कारण बगल का पीपल अर्रा कर गिरा | जलती चिता पर और सावित्री उछाल दी गई | वह होश में आयी तो वह मड़ई में थी | अनमोल की मां उसे गर्म दूध पिला रही थी | " उछाल खाने के कारण उसका शरीर नदी में गिरी " बहते बहते मल्लाह के लकड़ी छानने के जाल में आ गई |

५. सावित्री कुंवर :

साहसी :

सती प्रथा को लेकर रायसाहब ने दिल्ली में सती मंदिर का स्थापना किया है इस अवसर पर उन्होंने भाषण रखा था उसे भाषण में सती और अपने दोनों बेटों लव और कुश को लेकर दुनिया के सामने आती है और जो घटना उसके साथ घटी वह बताती है तब राय साहब अपने लठेतो को मार कर भगाने के लिए कहता है तभी धर्माचार्य इस पर रोक लगाते हैं |

लचीलापन :

चिता पर पति की लाश को गोद में लेकर बिठा दिए जाने पर भी उसे नीम बेहोशी में वह पूरी शक्ति लगाकर चीख पड़ती है | गांव वाले बहुत सारा पेट्रोल घी डालते हैं जिससे आग बुझ न पाए,तेज आंधी के कारण बगल का पीपल अर्रा कर गिरा | जलती चिता पर और सावित्री उछाल दी गई | वह होश में आयी तो वह मड़ई में थी | अनमोल की मां उसे गर्म दूध पिला रही थी | " उछाल खाने के कारण उसका शरीर नदी में गिरी " बहते बहते मल्लाह के लकड़ी छानने के जाल में आ गई | वह अनमोल के साथ ढल जाती हैं |

शोषित स्त्री :

सावित्री कुंवर का विवाह जबरन छोटे राजकुमार से किया गया | जो सावित्री कुंवर स्कुल में झांसी की रानी लक्ष्मी बना करती थी वहीं सावित्री कुंवर का पति दिन रात शारीरिक शोषण करता था | उसका शरीर खरोचता, नोचता, दांत से काटता, महावारी में भी शारीरिक सबंध बनाता |

६. कुलदेवी :

कुलदेवी उदय प्रताप सिंह की रखैल है और लालसाहब की माँ है |

शोषित स्त्री :

कुलदेवी का भी शारीरिक शोषण उदय प्रताप करता है वह कुंवारी माँ बनती है कुंवारी माँ बनने का दाग लगने के कारण कुलदेवी बावड़ी में कूदकर आत्महत्या कर लेती है |

कायर :

कुलदेवी जो कुंवारी मां थी वह बावड़ी में कूद कर आत्महत्या कर लेती है उसकी आत्मा भी भटकती है जब तक कुलदेवी जिंदा थी तब तक गांव में पानी की समस्या नहीं हुई उसके मरते ही नदी और बावड़ी में सूखा पड़ गया | इसलिए गांव वालों नदी के पास जाकर पूजा करते हैं जिससे कुलदेवी का प्रकोप गांव वालों पर ना पड़े | कुलदेवी कुंवारी माँ बनने के कारण बहुत बदनाम हुई, वह परिस्थितियों से लड़ने की बजाय बावड़ी में कूद कर आत्महत्या कर लेती है |